श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

आपमें विद्यमान भगवान का प्रकाश

सत्संग में गुरुमाई जी ने वर्ष २०२६ के अपने सन्देश की अन्तिम पंक्ति के एक वाक्यांश का उल्लेख किया : *अपनी चेतना को प्रबुद्ध करो।* गुरुमाई जी ने इस बात पर बल देते हुए कहा कि यह वाक्यांश अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, और उनके शब्द अब भी मेरे बोध में उतरते जा रहे हैं। इस विषय में गुरुमाई जी की सिखावनियों पर मेरे बहुत-से और कई तरह के आरम्भिक विचार हैं, परन्तु मैं वे सभी विचार यहाँ आपके साथ साझा नहीं करूँगी।

तथापि, मैं गुरुमाई जी की उस एक सिखावनी पर केन्द्रण करूँगी जो उन्होंने अपने सन्देश की इस पंक्ति पर व्याख्या करते समय प्रदान की थी। गुरुमाई जी ने कहा था, "तुम अपने आपको छोटा बनाओ ऐसा कोई तुमसे नहीं कह रहा। भगवान का प्रकाश होना तुम्हारे जन्म का उद्देश्य है और तुम भगवान का प्रकाश *हो।*"

गुरुमाई जी ने यह सत्संग मकर संक्रान्ति के दिन किया था, उस दिन पर जब हम सूर्य की आराधना करते हैं और उस ऋतु के आगमन का उत्सव मनाते हैं जब उत्तरी गोलार्ध में प्रकाश बढ़ने लगता है। गुरुमाई जी की सिखावनी पर मनन करते हुए, मुझे याद आ रहा है कि गुरुमाई जी ने सूर्य की उपमा देते हुए हमें यह बात गहराई से समझाई थी कि हम भगवान के प्रकाश का ही विस्तार हैं। अपने प्रवचनों व अपनी कविताओं में गुरुमाई जी ने कहा है कि हममें से हरेक सूर्य की एक किरण के समान है जोकि महाशक्तिमान सूर्य से निकलकर सब ओर प्रसरित होती है। यह ऐसी छवि है जो आश्वासन देती है और साथ ही शिक्षाप्रद भी है। यह हमें इस बात का भरोसा दिलाती है कि भगवान का प्रकाश शाश्वत रूप से हमारे अन्दर विद्यमान है। इसका अर्थ यह भी हुआ कि चूँकि हम इस प्रकाश से सम्पन्न हैं, इसलिए हममें यह क्षमता भी है *और* हमारा यह उत्तरदायित्व भी है कि हम इस प्रकाश को दूसरों के साथ बाँटें, संसार के साथ अपने आचार-व्यवहार में इसे उतारें।

इसलिए मैं आपसे पूछना चाहती हूँ : आपने अपने अन्दर सूर्य के प्रकाश को किस तरह अनुभव किया है? क्या आपने विश्व में अपना प्रकाश बाँटने के लिए खुद की सराहना की है?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।